Lecture - 20

गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली

21-04-2020

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
'हिन्दी साहित्य का इतिहास'

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'हिंदी साहित्य का आदिकाल' नामक पुस्तक में लिखा है - "लीला के पद कब लिखे जाने लगे - यह भी कुछ निश्चय के साथ नहीं कहा जा सकता किन्तु दसवीं - ग्यारहवीं शताब्दी के मात्रिक छन्दों में श्री कृष्ण लीला के गाने की प्रथा चल पड़ी थी, इसमें कोई सन्देह नहीं। जयदेव का गीत गोविन्द इसी प्रकार के मात्रिक छन्दों के पद में लिखा गया था। --- जयदेव के बाद उसी प्रकार की पदावली बंगाल के चण्डीदास और मिथिला के विद्यापति नामक कवियों में लिखी। --- जिस प्रकार के पद बंगाल और उड़ीसा में प्रचलित थे उसी प्रकार के पद सुदूर पश्चिम में भी प्रचलित थे। अर्थात पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत में ऐसे पद व्याप्त थे।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यापति जिस समय पदावली की रचना कर रहे थे उस समय उसका अखिल भारतीय स्वरूप मौजूद था। हिंदी में और खासकर मैथिली में विद्यापति गीतिकाव्य परंपरा के प्रणेता

Scanned with CamScanner

के रूप में उभरते हैं।

लीलागान की यह परंपरा लोक मानस में मौजूद थी। इसीलिए इनमें जन भावना की सरल, सहज और अखिल अभिव्यक्ति हुई है। विद्यापति की पदावली में प्रेम भी है और भक्ति भी, शृंगार भी है और आध्यात्मिकता भी।

पदावली के कारण ही विद्यापति मैथिल कोकिल कहलाए। उन्होंने जन भाषा मैथिली में काव्य रचना की। विद्यापति जन कवि थे। उनके जन सरोकार, जनचेतना, भावनात्मक उत्कर्ष तथा अनुभूति की सूक्ष्मता का परिचय उनकी पदावली ही देती है।

पदावली श्रेष्ठ गीतिकाव्य है। इनमें भावों की लयात्मक गति के साथ-साथ काव्य और संगीत का अनूठा सामंजस्य है। उनके असंख्य गीत लोक कंठ में बस गए हैं। उनका यह काव्य लोकसंस्कृति से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। इसमें जन-जीवन की सामान्य सच्चाई प्रस्फुटित हुई है।

बड़ा कवि अनुकरणीय होता है। उससे उसके युग के कवि प्रभावित होते हैं। विद्यापति से भी गोविंददास, हरिदास आदि मैथिली के कवि प्रभावित हुए। सूरदास के लीलापदों पर भी विद्यापति के गीतों का प्रभाव स्पष्ट है। यही नहीं निराला के गीतों पर भी विद्यापति की

Scanned with CamScanner

गीतात्मकता का प्रभाव देखा जा सकता है। बंगाल का 'ब्रजबुलि' असम का 'बरगीत' तथा 'अंकियानाट' पर विद्यापति के गीतों की स्पष्ट छाप है। यही नहीं 'नेपाल' के कुछ कवि भी विद्यापति से प्रभावित हुए।

गीतिकाव्य और विद्यापति

साहित्य और काव्य के अन्य उपभेदों की तरह ही गीतिकाव्य की भी कोई सर्वमान्य परिभाषा स्थिर करना कठिन है। पर कई आचार्यों ने अपने आधार पर गीतिकाव्य की कुछ विशेषतायें तय की हैं-

1- मुक्तक पद
2- गेयता
3- भावना की तीव्र अभिव्यक्ति
4- घटना प्रवाह की ~~कम~~ त्वरा

अर्थात गीतवाद्यों के साथ गाया जाने वाला छन्दबद्ध काव्य गीतिकाव्य होगा। लेकिन यह भी ध्यान में रखना ~~होगा~~ है कि एक श्रेष्ठ कलाकार इतिहास ग्रंथ के पाठ को भी वाद्य यंत्र के साथ गा देंगे तो वह गीतिकाव्य नहीं होगा, उसमें भावनात्मक अनुभूति का चित्रण भी होना चाहिए। और वह भी इकहरी अनुभूति या स्थिति का चित्रण।

Scanned with CamScanner

अर्थात ऐसी भावनात्मक अनुभूति जिसमें संक्षिप्तता और मानवीय भावनाओं में रंग और गति हो। संक्षिप्तता इसका बड़ा ही आवश्यक बंध है। गीति - वाद्य के साथ गाया जाने वाला महाकाव्य, गीतिकाव्य नहीं कहलाएगा। इन दो शर्तों के साथ त्वरा अर्थात शीघ्रता भी बहुत आवश्यक है। घटना प्रवाह की त्वरा। शीघ्रता बहुत अच्छी चीज नहीं है। पर अत्यंत संक्षिप्त भावना की अभिव्यक्ति होने के कारण गीतिकाव्य के लिये त्वरा बहुत आवश्यक शर्त हो जाती है।

हीगेल ने गीतिकाव्य की दो आवश्यक शर्तें बताई हैं। उनके अनुसार गीतिकाव्य के पूरे छन्द में सम्बद्धता अनिवार्य है। अर्थात भावाकुलता और प्रभाव की समान स्थिति का अटूट निर्वाह होना चाहिए। इसके बिना प्रभावान्विति क्षति होती है। इनकी दूसरी शर्त है कथन और घटना - प्रवाह में त्वरित परिवर्तन की स्थिति। अर्थात नई बात कहकर उसे तुरंत पूर्वकथित हिस्से में जोड़ देना और इससे रसो द्रेक उत्पन्न कर प्रभाव को उत्कर्ष देना एक सफल गीतिकार का कौशल ही है।

गीतिकाव्य की उत्पत्ति की चर्चा करते हुए डॉ० शिव-प्रसाद सिंह लिखते हैं - "काव्य की अन्य विधाओं की तरह गीति काव्य चूँकि सचेत बुद्धि व्यापार से उत्पन्न वस्तु नहीं है, इसलिए आदिम मानव के अति पुरातन और आरम्भिक

Scanned with CamScanner

भावों के साथ ही गीतिकाव्य का जन्म हुआ। हालांकि यह कहना कठिन है कि गीतिकाव्य के आविर्भाव का निश्चित काल क्या है, किन्तु इतना तो सहज अनुमेय है कि संवेगों की तीव्रता और उद्वेलन की सामान्य परिस्थितियों में भावाकुल अभिव्यक्ति के स्वरों का रूप लिखा - ऐसे शब्द और अर्थ की तथा उनकी पुनरावृत्ति - यही गीति काव्य है।

हिन्दी गीतिकाव्य के पहले रचनाकार विद्यापति हैं। विद्यापति पदावली लीलागान की परंपरा में पड़ती है। लीलागान की परंपरा लोकमानस में व्याप्त थी। इसका प्रमान जयदेव का गीति गोविन्द है। बंगाल, उड़ीसा, कश्मीर में श्री कृष्ण लीला के गाने का प्रचलन था। हिन्दी में सर्वप्रथम विद्यापति ने इस प्रकार के गीतों की रचना की। उनकी पदावली जयदेव के गीत गोविन्द से प्रभावित है।

विद्यापति ने गीतिकाव्य के रूप में पदावली की रचना मुक्तक शैली में सफलतापूर्वक की। इसमें आए भाव अपने आप में पूर्ण स्वतंत्र हैं। गीतिकाव्य में भावनाओं की अभिव्यक्ति की प्रमुखता होती है। विद्यापति पदावली में राधा-कृष्ण के व्यक्तिगत प्रेम का सूक्ष्म अंकन हुआ है। संगीतात्मकता और कोमल कांत पदावली के लिए तो विद्यापति प्रसिद्ध हैं। इनकी कविता में काव्य और संगीत का अद्भुत मेल हुआ है।

Scanned with CamScanner